पंजीकरण प्रपत्र

(टंकित या छाया प्रति का उपयोग कर सकते हैं)

नाम :.....

पदनाम :.....

विश्वविद्यालय/संस्था :.....

देश :.....राज्य .....

पत्र–व्यवहार का पता : .....

.....

ई–मेल :.....

मोबाइल नंबर :.....

दूरभाष : कार्यालय .....निवास.....

शोध पत्र का शीर्षक : .....

.....

प्रस्तुति का प्रकार : मौखिक / पोस्टर / भागीदारी : .....

प्रतिभागिता शुल्क : (नीचे रिक्त खाने में चिन्ह लगाएं)

प्राध्यापक :	1500 /-
शोधार्थी :	1200 /-
विद्यार्थी :	1000/-
अन्य :	1000/-

भुगतान करने के लिए स्कैन करें

भुगतान का विवरण: ----------

भुगतान की तारीख: .....

आवास की आवश्यकता हाँ / नहीं :.....

नोट–आवास एवं परिवहन का व्यय प्रतिभागी को स्वयं करना होगा।

आगमन की तिथि / साधन / समय :.....

प्रस्थान की तिथि / साधन / समय :.....

हस्ताक्षर:.....

वृद्ध विमर्श : कल आज और कल

उपविषय

- हिन्दी साहित्य में वृद्ध विमर्श
- बदलते सामाजिक मूल्य एवं वृद्ध विमर्श
- ऐतिहासिक परिदृश्य में वृद्ध विमर्श
- भारत में वृद्धों की सामाजिक समस्या और समाधान
- वृद्ध विमर्शः परम्परा और आधुनिकता का द्वंद
- वृद्ध विमर्शः मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक, आर्थिक, राजनैतिक और मूल्य आधारित आयाम
- वृद्धों के जीवन को सुखमय बनाने में सरकार की भूमिका
- वृद्ध व्यक्तियों के लिए कानूनी प्रावधान और योजनाएँ
- विश्व में वृद्ध जीवन की समस्या और उनका निदान
- 21 वी सदी का वृद्ध जीवनः त्रासदी
- शहरी एवं ग्रामीण वृद्धों की समस्याएँ : एक विवेचन
- हिन्दी साहित्य में प्रतिबिंबित वृद्धों की सामाजिक समस्याएँ
- समकालीन कविता में वृद्ध विमर्श
- समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में चित्रित वृद्ध जीवन की समस्या
- वृद्धावस्था और गैर सरकारी संगठनों की भूमिका

उपविषयों के अतिरिक्त अन्य किसी भी संदर्भित विषय पर शोध पत्र स्वीकार्य है

शोध पत्र एवं सारांश

उपरोक्त विषय से संबंधित किसी भी विषय पर सारांश एवं शोध पत्र आमंत्रित हैं। सारांश 200 से 500 शब्दों में तथा शोध पत्र अधिकतम 2000 शब्दों में होना चाहिए। शोध पत्र का फांट यूनिकोड (12 प्वाइंट) अथवा कृतिदेव–010 (14 प्वाइंट) में ही होना चाहिए। अंग्रेजी भाषा में प्रेषित शोध पत्र का फांट–टाईम्स न्यू रोमन (12 प्वाइंट) में स्वीकार्य है। इस अवसर पर स्मारिका का प्रकाशन किया जाएगा जिसमें शोध पत्रों का सारांश शामिल होगा। श्रेष्ठ शोध पत्रों की प्रस्तुति को पुरस्कृत कर प्रमाण–पत्र प्रदान किया जाएगा।

शोध सारांश प्रेषित करने की अंतिम तिथि – 30 जनवरी 2024

पूर्ण शोध पत्र प्रेषित करने की अंतिम तिथि – 2 फरवरी 2024

शोध सारांश एवं शोध पत्र प्रेषित करें –

hindiseminar@matsuniversity.ac.in

MATS UNIVERSITY

NAAC Accredited University

राष्ट्रीय संगोष्ठी

वृद्ध विमर्श

कल आज और कल

16 एवं 17 फरवरी 2024

समय – सुबह 10.00 बजे से शाम 5 बजे तक

स्थान – इम्पेक्ट सेंटर, मैट्स यूनिवर्सिटी कैम्पस के पीछे, पंडरी, रायपुर

हिन्दी विभाग

कला एवं मानविकी अध्ययनशाला

मैट्स विश्वविद्यालय

पंडरी, रायपुर, छत्तीसगढ़–492001

हिन्दी विभाग एवं मैट्स विश्वविद्यालय

मैट्स विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़ राज्य का प्रथम निजी विश्वविद्यालय है। भारत सरकार के राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) द्वारा वर्ष 2018 में बी प्लस–प्लस ग्रेड प्राप्त करने वाला यह राज्य का भी प्रथम विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय में विभिन्न संकायों के 13 विभाग और मैट्स कॉलेज भी स्थापित है। रायपुर शहर के बीच में विद्यार्थियों की सुविधा के लिए पंडरी में सिटी कैम्पस संचालित है। मुख्य परिसर ग्राम गुल्लू, आरंग में है जो अपने सौंदर्य एवं मूलभूत अधोसंरचनाओं के लिए पूरे राज्य में प्रसिद्ध है।

हिन्दी विभाग

नई युवा पीढ़ी के बीच राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार एवं हिन्दी साहित्य के विकास हेतु मैट्स विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग की स्थापना वर्ष 2012 में की गई। हिन्दी विभाग के अंतर्गत बी.ए. ऑनर्स हिन्दी पत्रकारिता एवं पर्यटन, एम.ए. हिन्दी, पी.एचडी. तथा पत्रकारिता एवं जनसंचार में डिप्लोमा का पाठ्यक्रम संचालित है। विभाग द्वारा हिन्दी सप्ताह, अखिल भारतीय कवि सम्मेलन, विभिन्न सामाजिक–सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा विद्यार्थियों में सृजनात्मक क्षमताओं के विकास हेतु राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठी एवं विशेष व्याख्यान सत्र का आयोजन किया जाता है।

शिक्षा के साथ कॅरियर का निर्माण

हिन्दी विभाग द्वारा संचालित बी.ए. ऑनर्स हिन्दी के तहत पत्रकारिता एवं पर्यटन का त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को पत्रकारिता और पर्यटन के क्षेत्र में रोजगार के अवसर उपलब्ध करा रहा है। विद्यार्थियों को इस पाठ्यक्रम के तहत हिन्दी में अनुवादक, कार्यालयीन कार्य, हिन्दी साहित्य तथा हिन्दी पत्रकारिता (आकाशवाणी, दूरदर्शन, समाचार पत्र–पत्रिकाएं, एफ.एम., न्यूज चैनल) में रोजगार के अवसर उपलब्ध हो रहे हैं। मीडिया का व्यावहारिक ज्ञान और इंटर्नशिप पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग है। बी.ए. राजनीति विज्ञान, इतिहास एवं समाजशास्त्र के साथ ही एम.ए. हिन्दी में पत्रकारिता का पाठ्यक्रम भी संचालित है जिससे विद्यार्थियों को रोजगार उपलब्ध हो सके।

विषय की प्रासंगिकता

परिवर्तन प्रकृति का अटल नियम है। मनुष्य एक परिवर्तनशील प्राणी है। जीवन की प्रत्येक अवस्था में हर क्षण परिवर्तन घटित होता है। बचपन, किशोर, युवा और प्रौढ़ावस्था के बाद वृद्धावस्था भी प्राकृतिक परिवर्तन की एक क्रमिक, सतत प्रक्रिया है। भारत में सात सौ से भी ज्यादा वृद्धाश्रम हैं जिनमें हजारों वृद्ध जीवन–यापन कर रहे हैं। राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग के अनुसार भारत की जनसंख्या में वृद्ध जनों की हिस्सेदारी वर्ष 2011 में लगभग 9: थी जो वर्ष 2036 तक 18: तक पहुँच सकती है।

तकनीकी और प्रौद्योगिकीय परिवर्तन के साथ ही औद्योगीकरण, शहरीकरण, वैश्वीकरण के फलस्वरूप भारतीय समाज में तीव्र परिवर्तन दृष्टव्य है। पारंपरिक मूल्यों से लेकर अंतर–पीढ़ी संबंधों तक में हमें परिवर्तन देखने को मिलता है। इसका सबसे ज्यादा प्रभाव वृद्ध–पीढ़ी पर देखा जा रहा है। वृद्धावस्था की अनेक समस्याएँ हैं जिनमें वृद्ध परिजनों की उपेक्षा, अकेलापन, बेकारी, सेवानिवृत्ति के बाद निराशा, अलगाव, शक्तिहीनता, स्वास्थ्य समस्याओं आदि का उल्लेख किया जा सकता है। बुजुर्ग आबादी की ये समस्याएँ हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं में विवेचित होती रही हैं। बढ़ती वृद्ध आबादी के साथ उपर्युक्त समस्याएँ भी बढ़ रही हैं जिनके समाधान के लिए वृद्ध विमर्श को आधार बनाना प्रासंगिक प्रतीत होता है। भारतीय संस्कृति के मूल में वृद्धजनों को पूज्यनीय मानकर उनका सम्मान करना, उनसे आदर्श और ज्ञान प्राप्त करने के मूल्य निहित हैं जिनकी रक्षा करना हम सभी का कर्तव्य और दायित्व है। आज जरूरत है वृद्धजनों को निराशा के घोर अंधकार से निकालने की। वृद्ध विमर्शः कल, आज और कल विषय पर इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन करने का उद्देश्य वृद्धजनों को उत्साह के साथ जीवन–जीने के पथ पर अग्रसर करने के समाधान खोजना है।

आमंत्रित अतिथि

अलका सरावगी
(वरिष्ठ महिला साहित्यकार, कोलकाता)

मनीषा कुलश्रेष्ठ
(वरिष्ठ महिला साहित्यकार, राजस्थान)

श्री प्रेम भारद्वाज 'ज्ञानभिक्षु'
(अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त लेखक,कवि, समालोचक सदस्य अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति न्यूयार्क)

डॉ. सुशील त्रिवेदी
(वरिष्ठ साहित्यकार, सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी, सम्प्रति : संपादक–छत्तीसगढ़ मित्र)

डॉ. सच्चिदानंद शुक्ल
(कुलपति, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़)

प्रो. आर.एस कुरील
(कुलपति, महात्मा गांधी वानिकी एवं उद्यानिकी विश्वविद्यालय, रायपुर)

डॉ. सुधीर शर्मा
(वरिष्ठ साहित्यकार एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कल्याण कॉलेज, भिलाई)

सलाहकार समिति

मुख्य संरक्षक

श्री गजराज पगारिया (कुलाधिपति)
श्री प्रियेश पगारिया (महानिदेशक)

संरक्षक

प्रो. (डॉ) के.पी. यादव (कुलपति)
श्री गोकुलानंदा पंडा (कुलसचिव)
डॉ. दीपिका ढांड (उपकुलपति)
डॉ. विजय भूषण (डीन, एकेडमिक)

आयोजन समिति

आयोजक

डॉ. रेशमा अंसारी – 9926348979
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग

आयोजन सचिव

डॉ. कमलेश गोगिया –9753388270
सह प्राध्यापक, हिन्दी विभाग एवं वरिष्ठ पत्रकार

सदस्य

डॉ. रमणी चंद्राकर (सह प्राध्यापक) – 9993397129
डॉ. सुनीता तिवारी (सहायक प्राध्यापक) – 8928043699
डॉ. सुपर्णा श्रीवास्तव (सहायक प्राध्यापक) – 9340348481
सुश्री प्रियंका गोस्वामी (सहायक प्राध्यापक) – 9131785064

वेब एवं टेक्निकल :

मेघनाधुडु. काटाबत्तुनि